अध्यात्म के बिना मूल्य शिक्षा अधूरी

-डॉ.डी.पी सिंह

इन्दौर, ज्ञान शिखर। वेल्यु एजुकेशन एन्ड स्प्रीच्युलिटी के कार्यक्रम संपर्क केन्द्र के शुभारंभ पर मंचासीन ब्र.कु.शशी, डॉ. पान्डीयामणी, कुलपति डॉ.डी पी सिंह, ब्र.कु.ओमप्रकाश, डॉ.आर.पी. गुप्ता एवं डॉ.राजीव शर्मा

इंदौर। मानवीय मूल्यो की सबको आवश्यकता है। हमे राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्यो मे श्रेष्ठता के लिये मूल्यो की शिक्षा जरुरी है। अध्यात्म के बिना मूल्य शिक्षा अधूरी है। अत: ईमानदारी के साथ काम करने वालो के सम्मानार्थ समाज और मीडिया के सामने आने की आवश्यकता है ।

उक्त विचार देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.डी.पी सिंह ने "ज्ञान शिखर" कॉम्प्लेक्स मे ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म' विषय पर आयोजित संगोष्ठी मे मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए व्यक्त किये। संगोष्ठी का आयोजन अन्नामलाई विश्वविद्यालय, मदुराई एवं ब्रह्माकुमारीज के द्वारा संयुक्त रूप से संचालित मुल्य शिक्षा पाठयक्रमो का इंदौर मे 'संपर्क एवं अध्ययन केंद्र' के शुभारंभ अवसर पर किया गया था। इस अवसर पर दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के निदेशक एस.पांडियमणि ने कहा की मूल्य शिक्षा पाठयक्रमो मे एम.एस.सी, एम.बी.ए, पी.जी डिप्लोमा एवं डिप्लोमा करनयन केंद्र से सुविधा होगी। भारत तथा नेपाल मे यह पाठयक्रम हिंदी एवं अंग्रेजी सहित छह भाषाओ मे संचालित किये जा रहे है तथा हर कोई इसे कर सकते है। आपने अध्यात्मिक शिक्षा पाठयक्रमो की महत्ता पर भी प्रकाश डाला। ब्रह्माकुमारीज शिक्षा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक डॉ.आर.पी. गुप्ता ने बताया कि इन पाठयक्रमो का अब तक` वाले विद्यार्थियो को अन्नामलाई विश्वविद्यालय से संपर्क करने मे इस मध्य 10,000 से अधिक विद्यार्थी लाभ ले चुके है और अभी भी भारत और नेपाल के विद्यार्थी बडी संख्या मे सम्मिलित हो रहे है।अपने आशिर्वचन मे क्षेत्रीय निदेशक ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाईजी ने कहा कि जीवन मे मानवी मूल्यो की धारणा से युवा वर्ग उच्चता के शिखर तक पहुंच सकता है। मूल्यनिष्ठता हमारे अंदर के आक्रोश, असंतोष एवं नकारात्मकता को समाप्त करती है। शिक्षा प्रभाग की जोनल कोऑर्डिनेटर ब्रह्माकुमारी शशी बहन ने अतिथियो का स्वागत किया तथा मंच का कुशल संचालन डॉ.राजीव शर्मा ने किया। कुलसचिव, डॉ.मानसिंह परमार, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ने भी अपने विचार व्यक्त किये ।

राजनांदगांव। प्लेटिनम जुबली के अंतर्गत आध्यात्मिक समारोह में विशाल जनसमूह का अभिवादन करते हुऐ ब्र.कु.पुष्पा, मंचासीन ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई जी, ब्र.कु.कमला,रायपुर अन्य।

बूंदी। पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए माउंट आबू की ब्र.कु.गीता बहन साथ में है ब्र.कु.कमला एवं ब्र.कु.छाया।

मंदसौर। जन जन में दूर्व्यसनों को त्यागने की जागृति लाने के लिए अभियान में नशा मुक्ति रैली दृश्य।

इन्दौर, छात्रावास। दीपावली पर दीप जालाते हुए ब्र.कु.शकुंतला बहन एवं दीपराज शिवबाबा की रुहानी दीपरानीयाँ

झालावाड़। स्नाकोत्तर महाविद्यालय, शपथ ग्रहण समारोह में मूल्य निष्ठ शिक्षा पर उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.मीना ।

चिरकुण्डा। दामोदर भेलि कार्पोरेशन, पंचेत प्रोजेक्ट में सतर्कता जागरूकता सप्ताह अभियान के दौरान लाभ लेने वाले सभी अधिकारी साथ में ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. पिंकी एवं ब्र.कु. दीपक।

ऐसे थे महान तपस्वी ....

पेज 4 का शेष...

प्यार में वे स्वयं को भूले रहते थे। अंतिम दिन भी जब उनसे पूछा कि बाबा क्या डाक्टर को बुलायें (बाबा को छाती में थोड़ा दर्द था) उन्होने नशे में उत्तर दिया था -बच्चे, बाबा तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा है, डाक्टर आकर क्या करेगा। अंतिम दिन वे ईश्वरीय नशे में खोये हुए व परमात्म-प्यार में मग्न थे। जितना प्यार उनका

परमपिता से था, उतना ही प्यार उनके यज्ञ व उनकी ज्ञान मुरली से था। एक भी दिन उन्होने क्लास मिस नहीं की थी। मुरली सुनाते हुए वे ज्ञान डाँस करते थे। शिव बाबा से हमेशा प्यार भरी बातें करते थे। वह उनका परम प्रियतम जो था। इस प्रभुप्रेम में वे संसार भूले रहते थे।

16- गजब का संतुलन था उनके जीवन में - उनके जीवन में गम्भीरता व रमणीकता का, न्यारे व प्यारेपन का, लॉ व लव का, भावना व विवेक का, सिम्पल और रॉयल्टी का, उदारता व एकानामी का, जिम्मेवारी व हल्केपन का, सत्यता व सभ्यता का सम्पूर्ण संतुलन था। वे महान योगी वसर्वश्रेष्ठ चिन्तक होने के नाते स्वत: ही गंभीर रहते थे। उनका बहुत समय एकांत में जाता था। वे सागर की तरह गम्भीर परन्तु उदार इतने थे कि आकाश भी छोटा पड़ जाए। उनको देखकर लगता था -मानो इस दुनिया का चिन्तन तो उन्हें स्पर्श ही नहीं करता, वे तो सदा ईश्वरीय चिन्तन में खोये हैं। परन्तु साथ ही साथ उनके चेहरे पर मुस्कान व व्यवहार में रमणीकता भी कम नहीं थी, वे सूखे सन्यासी नहीं थे। बच्चों को बहुत प्यार करते थे, सभी से हल्के व मित्रवत रहते थे। ऐसे नहीं कि कोई उनके समीप जाने के लिए डरता हो। वे सबको खूब हँसाते बहलाते थे, पिकनिक कराते थे व प्रत्येक गुरूवार के दिन सभी के साथ बैठकर ब्रह्मा भोजन भी करते थे। वे बड़े विनोदी भी थे। वातावरण को सदा खुशनुमा व हल्का रखते थे। उनकी गम्भीरता वातावरण को बोझिल नहीं करती थी।

17- उनके वायब्रेशन्स पूर्णत: अलौकिक व सम्पूर्ण पवित्र थे - लोग उनके पास समस्याएँ लेकर आते थे और मुक्त होकर जाते थे। रोते आते थे और हँसते जाते थे। भारीपन लेकर आते थे और हल्के होकर प्रसन्न होकर बाहर निकलते थे। सभी का अनुभव था कि जाकर बाबा से ये ये पूछेंगे परन्तु वहाँ जाते ही मन इतना शान्त हो जाता था कि या तो प्रश्न करना ही भूल जाते थे या स्वत: ही उत्तर पा लेते थे। बात सन् 1968 जून की है। बाबा अकेले, एकांत में अपनी झोपड़ी में विराजमान थे। मैं बगीचे के बाहर खड़ा देख रहा था। ऐसा आभास हो रहा था कि यहाँ कोई महान तपस्वी बैठा है। झोपड़ी से जैसे कि शांति के सागर की शांति की लहरें चारों ओर फैल रही थीं। जिसको वे दृष्टि दे देते थे उनका चित्त शांत हो जाता था।

18- वे अति शक्तिशाली व महान लीडर थे - मनोहर दादी सुनाती थीं कि एक शहर में कई विरोधी तत्व ईश्वरीय सेवा में अत्यधिक विघ्न डाल रहे थे, मरने मारने को तैयार हो रहे थे तो हमने बाबा को लिखा कि बाबा इस स्थान को छोड़ दें और दूसरी अच्छी जगह पर सेवा करें। हम पूरी तरह हार मान चुके थे, थक चुके थे। बाबा का उत्तर आया -तुम बकरी हो या शेरनी। मुझे मैं-मैं करने वाली बकरियों का झुण्ड नहीं चाहिए, मुझे चाहिए सिंहनाद करने वाले शेर-शेरनी। बस यह सुनते ही हम शेर बन गये। ऐसे लीडर थे बाबा जो कि अपनी शिव-शक्ति सेना में बल भरते रहते थे। वे समस्याओं के आगे नहीं झुकते थे, वे समय की धारा को भी बदलने की शक्ति रखते थे। समय उनके आगे समर्पित हो गया था। सर्वशक्तिवान के बाद शक्ति सम्पन्न आत्मा में उनका ही स्थान है। कुछ भी हो गया जिन्होने अपनी महान स्थिति को एकरस रखा। ऐसी दिव्य आभा से सम्पन्न थे बाबा हमारे...जिनके चरित्र में चमकता था सम्पूर्ण देवत्व...जिनका हर कर्म उनके पुण्यों की कहानी कहता था...जिनके मुख से सदा वरदान निकलते थे...जिसके सिर पर वे हाथ रख देते थे, उनके भाग्य का सितारा चमकने लगता था, उनके बुरे दिन समाप्त हो जाते थे, उनके बिगड़े हुए काम बन जाते थे...उनके जीवन से काले बादल छँट जाते थे। ऐसे पिता की हम सन्तान हैं। ●